



Indian Council of
Social Science Research



Events organized under 'Azadi Ka Amrit Mahotsav'

1. Awareness program on Sukanya Samriddhi Yojana held on October 23, 2021



Council for Social Development, Hyderabad a premier research institute of the Indian Council of Social Science Research (ICSSR) organized an event on the theme Action@75 under Azadi Ka Amrit Mahotsav. Awareness was created for the girl child parents with regard to the importance and benefits of the Sukanya Samriddhi Yojana (SSY) to a gathering of 25 people at Chilkanagar, Uppal, Hyderabad. The information about the scheme has been well received and accepted by the gathering in wake of the financial security and independence it would provide to the girl child as well as their parents and guardians.

2. Registering workers for e-SHRAM held from October 30, 2021 to November 30, 2021 at Council for Social Development, Hyderabad



Council for Social Development, Hyderabad a premier research institute of Indian Council of Social Science Research (ICSSR) organized an event on the theme action@75 under Azadi Ka Amrit Mahotsav. A score of unorganized daily wage construction workers was informed and motivated to register e-SHRAM on October 30, 2021, at Chilkanagar, Uppal, Hyderabad. In the event, the details about the e-SHRAM registration and explained the importance and benefits were discussed in the long run.

3. Seminar on contributions of Bharat Ratna Dr. Bhim Rao Ambedkar held on December 01, 2021 at Swami Shraddhanand College, University of Delhi

भारतीय संविधान की मूल भावना भारतीय संस्कृति पर आधारित है : राज कुमार

- स्वामी श्रद्धानंद महाविद्यालय में "राष्ट्रीय संविधान दिवस" विषय पर आयोजित हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी

नई दिल्ली। स्वामी श्रद्धानंद महाविद्यालय में "राष्ट्रीय संविधान दिवस" विषय पर आयोजित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि बोलते हुए प्रदेश भाजपा कानूनी प्रकोष्ठ के संयोजक एवं राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र बार एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष राज कुमार ने कहा कि भारतीय संविधान की मूल भावना भारतीय संस्कृति पर आधारित है। संविधान को तर्कसंगत बनाने में बाबा साहेब ने अपना अमूल्य योगदान दिया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो० प्रवीण गर्ग ने कहा कि बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर



के आदर्शों का अनुसरण करते हुए हम सभी सर्वप्रथम तथा अन्त में केवल भारतीय हैं। गौरतलब है कि आजादी अमृत महोत्सव शृंखला के अन्तर्गत स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के संयुक्त तत्वाधान में बुधवार को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए राज कुमार ने कहा कि भारतीय

संविधान की आत्मा का मूल चरित्र इस सिद्धांत पर आधारित है कि देश के प्रत्येक नागरिक के साथ न्याय हो, भले ही वह नागरिक किसी भी जाति धर्म अथवा क्षेत्र से संबंध रखता हो। कालेज के प्राचार्य प्रो० गर्ग ने अपने संबोधन में कहा कि धर्मनिरपेक्षता भारतीय संस्कृति की मूल पहचान में समाहित है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के 125वें जन्म दिवस के अवसर पर वर्ष 2015 में 26 नवम्बर को संविधान दिवस के तौर पर मनाए जाने का बेहद सराहनीय निर्णय लिया था।



Indian Council of Social Science Research (ICSSR) extended financial support to sponsor this program under Azadi Ka Amrit Mahotsav. The aim of the seminar was to commemorate citizens to have believed in their nation and to make us aware of the nation's achievements in the field of agriculture, science, and technology. Such programs will not only help in nation-building but will help citizens in overcoming day-to-day challenges in their lives. Initiatives like these will further strengthen the country's performance at large and will provide bigger dreams and better opportunities.

In this seminar, the emphasis was on the contributions of Bharat Ratna Babasaheb Dr. Bhim Rao Ambedkar. Through this seminar, we were enlightened by the ideas of Dr. Ambedkar and his role in the freedom movement in India.

4. **Alternative Stories of Freedom Struggle Internship Programme organized by SHoDH-Delhi in collaboration with the Indian Council of Social Science Research and Hindu College from December 01-15, 2021**

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

SHODH
Indian Council of
Social Science Research

HINDU COLLEGE
CONSTITUENT OF DU

ALTERNATIVE STORIES OF FREEDOM STRUGGLE

Internship program being run by SHoDH-DELHI in collaboration
with Indian Council of Social Science Research & Hindu College

PRESENTS

ITS SECOND KNOWLEDGE EVENT RESEARCH METHODOLOGY WORKSHOP

HOW TO STUDY HISTORY?

EXPERTS FOR THE WORKSHOP:

 **DR. YUTHIKA MISHRA**
HISTORIAN
ASSOCIATE PROFESSOR,
VIVEKANANDA COLLEGE,
UNIVERSITY OF DELHI

 **DR. BHUWAN JHA**
FORMER FELLOW,
NEHRU MEMORIAL
MUSEUM AND
LIBRARY, DELHI

 THE PROGRAM WILL BE
PRESIDED BY
DR. ABHISHEK TANDON
DEPUTY DIRECTOR,
ICSSR

 GRACIOUS PRESENCE:
DR. ALOK PANDEY
NATIONAL IN-CHARGE,
SHODH

DATE: 05 DECEMBER 2021 (SUNDAY) | TIME 9:30 AM ONWARDS
VENUE: CPDHE COMMITTEE HALL, UNIVERSITY OF DELHI
(NEAR VISHWAVIDYALAYA METRO STATION)

CONTACT: DR. AANCHAL SETHI 9971478441



This internship program is being run by SHoDH-Delhi in collaboration with the Indian Council of Social Science Research and Hindu College. The project involves reaching out to the surviving freedom fighters living in Delhi NCR and interviewing/documenting their memories and contribution to the freedom movement. Through this internship, the student has been given the necessary training of academic skills by experts through one day workshop. All the interns will get experience certificates and credit mentions.

5. आजादी के 75 साल, सुशासन का स्वप्न और 2047 का भारत

दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, शिक्षा मंत्रालय एवं हंसराज कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का 25 दिसंबर को शुभारंभ हुआ। 'आजादी के 75 साल, सुशासन का स्वप्न और 2047 का भारत' विषय पर 25-26 दिसंबर को आयोजित होने वाली उक्त संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में प्रो. रमा, डॉ. अनिर्बान गांगुली, अनंत विजय एवं प्रो. रजनी अब्बी ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम के प्रारंभ में उपस्थित वक्ताओं ने दोनों भारत-रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं महान शिक्षाविद् महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी का उनकी जयंती पर स्मरण किया। इस अवसर पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध प्रतिष्ठान के मानद निदेशक एवं राष्ट्रवादी विद्वान डॉ. अनिर्बान गांगुली ने आजादी के बाद की विभिन्न सरकारों और वर्तमान नेतृत्व की सोच को सामने रखते हुए इस दौर को भारत के आत्म-गौरव, आत्म-सम्मान एवं स्वाभिमान के उत्कर्ष-काल के रूप में रेखांकित किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रॉक्टर प्रो. रजनी अब्बी ने कहा कि भारत एक मात्र ऐसा देश है जहां सुशासन की विशिष्ट परंपरा रही है। इन 75 वर्षों में कुछ चूक अवश्य हुई है लेकिन हमारी उपलब्धियां गर्व करने लायक हैं। दैनिक जागरण के एसोसिएट संपादक अनंत विजय ने कहा कि इस देश के इतिहास के संबंध में कई भ्रांतियां संस्थागत तरीके से पैदा की गईं और उसी का प्रचार-प्रसार किया गया।

अब आवश्यकता इस बात की है कि आज की पीढ़ी औपनिवेशिक सोच से बाहर निकले और इतिहास का तार्किक विश्लेषण करे।



आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ उद्घाटन।

आईसीएसएसआर और हंसराज कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित है संगोष्ठी।

दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, शिक्षा मंत्रालय एवं हंसराज कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आज शुभारंभ हुआ। आजादी के 75 साल, सुशासन का स्वप्न और 2047 का भारत' विषय पर आयोजित उक्त संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में प्रो. रमा, डॉ. अनिर्बान गांगुली, अनंत विजय एवं प्रो. रजनी अब्बी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के प्रारंभ में उपस्थित वक्ताओं ने दोनों भारत-रत्न



पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं महान शिक्षाविद् महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी का उनकी जयंती पर स्मरण किया। इस अवसर पर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध प्रतिष्ठान के मानद निदेशक एवं राष्ट्रवादी विद्वान डॉ. अनिर्बान गांगुली ने आजादी के बाद की विभिन्न सरकारों और वर्तमान नेतृत्व की सोच को सामने रखते हुए इस दौर को भारत के आत्म-गौरव, आत्म-सम्मान एवं स्वाभिमान के उत्कर्ष-काल के रूप में रेखांकित किया। उद्घाटन वक्ताओं का स्वागत करते हुए हंसराज कॉलेज की प्राचार्या

प्रो. रमा ने हंसराज कॉलेज को शक्ति का निर्वहण करने का आग्रह किया। साथ ही, वर्तमान शासन और नैतृत्व के सांख्यिक, दूरदर्शी एवं परिवर्तनकारी कदमों को सराहना की। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रॉक्टर प्रो. रजनी अब्बी ने कहा कि भारत एक मात्र ऐसा देश है जहां सुशासन की विशिष्ट परंपरा रही है। इन 75 वर्षों में कुछ चूक अवश्य हुई है लेकिन हमारी उपलब्धियां गर्व करने लायक हैं। दैनिक जागरण के एसोसिएट संपादक अनंत विजय ने कहा कि इस देश के इतिहास के संबंध में कई भ्रांतियां संस्थागत तरीके से पैदा की गईं और उसी का प्रचार-प्रसार किया गया।

दैनिक जागरण 'आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में दो दिवसीय संगोष्ठी शुरू

दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, शिक्षा मंत्रालय और हंसराज कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शनिवार को शुभारंभ किया गया। 'आजादी के 75 साल, सुशासन का स्वप्न और 2047 का भारत' विषय पर 25-26 दिसंबर को आयोजित होने वाली इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में प्रो. रमा, डॉ. अनिर्बान गांगुली एवं प्रो. रजनी अब्बी ने विचार रखे। उपस्थित वक्ताओं का स्वागत करते हुए हंसराज कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रमा ने विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को देश के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करने का आह्वान किया। उन्होंने वर्तमान शासन और नेतृत्व के सांख्यिक, दूरदर्शी एवं परिवर्तनकारी कदमों की सराहना की। कार्यक्रम में डॉ. विजय कुमार मिश्र हिंदी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. नृत्य गोपाल शर्मा भी उपस्थित रहे।

6. Webinar on 'Welfare Discourses in India'

Centre for Economic and Social Studies (CESS), Hyderabad, an ICSSR Research Institute organized a lecture. Prof. Prakash Sarangi delivered the lecture on 'Welfare Discourses in India' as part of the Azadi Ka Amrit Mahotsav CESS-DGS Special Lecture Series on Development Themes. The lecture broadly discussed the welfare strategies in India by classifying them into different phases starting from 1947 to 2004. The lecture put thrust on the four important phases of India since Independence.

Phase 1: Paternalistic Welfare (1947-68) characterised the political and economic contexts of Nehruvian model.

Phase 2: Clientilistic Welfare (1969-90) was about emergence of fractional politics and disintegration of consensual politics. And, with regard to third phase,


Phase 3: Basic Needs as Welfare (1991-2003) it was characterised with politics of segmentation, proliferation of parties and localization of politics. Sub-identities multiplied and stable clientele electoral linkage began to dismantle. The economic context was characterised by the policies of liberalization.

Finally, in the fourth phase, politics moved beyond segments. There has been a realignment and accommodation of diverse interests. Importance of larger coalition to assert power became prominent.

Azadi ka Amrit Mahotsav

CESS-DGS Special Lecture series on Development Theme-10

Topic: "Welfare Discourses in India"



Prof. Prakash Sarangi
Former VC, Ravenshaw University
Former Prof. Political Science, UoH


Venue
Seminar Hall, First Floor

Date: Dec 20, 2021
Time: 11:00 A.M. India


Join Zoom Meeting

Meeting ID: 819 2253 9657
Passcode: 932818


Zoom Link
<https://us02web.zoom.us/j/81922539657?pwd=YYZsOFU2TVlmY040QldubjQwMFRdCz09>



Chairperson
Prof. M. Gopinath Reddy



Moderator
Dr. Aivelu Kasturi



Centre for Economic and Social Studies, Hyderabad

7. Celebrating Unsung Heroes

Council for Social Development (CSD), Hyderabad, an ICSSR research institute in collaboration with Aryan School of Business Management, Bhubaneswar organized a programme on “Azadi ka Amrit Mohotsav” which was held on 21st December 2021.

Mrs Dipti Mishra, head of Programme Doordarshan Kendra, Bhubaneswar was the esteemed Chief Guest and shared her experience with the students where she offered a heartfelt thanks to the unsung heroes. She also highlighted the achievements of freedom fighters as well as motivated the student to be better in future. She elaborated how Doordarshan Bhubaneswar is celebrating “Azadi ka Amrit Mahotsav”.

Our Freedom Fighter Sri Padma Charan Nayak, an Eminent Gandhian, Columnist and anti – liquor activist of India who narrated his life struggle in the Freedom movement. He also shared that in his nineties, he was leading an Organisation named Milita Odisha Nisha Nibarana Abhijan where he used to sensitize public to voice against the spread of liquor in the state of Odisha and in India. At last, he concluded his speech by saying that he will continue his Struggle until there is a complete ban on Liquor in the Country.



8. Dissemination of a dying folk art form of Odisha – GOTIPUA

Council for Social Development (CSD), Hyderabad, an ICSSR research institute in collaboration with Aryan School of Business Management, Bhubaneswar organized an event on 'Dissemination of a dying folk art form of Odisha – GOTIPUA' under the Azadi ka Amrit Mohotsav on 21st December 2021.

GOTIPUA is a traditional dance art form of Odisha. However with the advent of modernisation and globalization, we have witnessed the emergence of a synthetic homogenous macro culture, as a result of which the micro-culture identities are at stake. They need revival. Mrs Dipti Mishra, head of Programme Doordarshan Kendra Bhubaneswar was the esteemed Chief Guest. In this event "Gotipua" dance guru Mr.Maguni Charan Jena was felicitated and his team performed Odisha's dying art form "Gotipua dance".



9. Vishva Guru Bharat Exploring the Glorious Past, Promising Present & Future Roadmap, a Curtain Raiser Ceremony held on 14th January 2022 through online mode.

Shaheed Rajguru College of Applied Sciences for Women, (University of Delhi) in collaboration with the ICSSR, New Delhi and Students of Holistic Development of Humanity (SHoDH), and knowledge partner COL (University of Delhi) organized a Curtain Raiser Ceremony on 14th January 2022 through online mode. The seminar will be held on 23-24 March 2022. The event was inaugurated with the opening remarks by Prof. Payal Mago, principal of Shaheed Rajguru College. Prof. Raj Kumar, Director, Patel Chest Institute, University of Delhi, inaugurated the Brochure of the seminar.

The ideas and practices sprawling from Indian culture and philosophy had defining influence on the world that is why India was the one and only "Vishva Guru" to ever exist. The 'official' historiography of India's freedom movement is vast and yet insufficient in bringing out the true facts about all the actors and activities that contributed to the eventual ending of the British rule. As we are entering into the celebrations of the 75th year of our independence, it is very vital to find the historiography into a more informed and accommodative shape. This Seminar is aimed at achieving a reinvigoration of novel research fields in academics. The research and development activities are the only pathway to reach to the goals of aspirational youth of India. The seminar targets the bridging of ancient knowledge with futuristic ideas.

